International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED), ISSN: 2320-8708
Vol. 1, Issue 6, Sept.-Oct., 2013, pp: (64-66), Available online at: www.erpublications.com

डॉ. भीमराव अम्बेड़कर के सामाजिक चिन्तन की वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ. संतोष गुप्ता

व्याख्याता – इतिहास, एम.एस.जे. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भरतपुर (राज.)

Abstract

'भारतरत्न' डॉ. भीमराव अम्बेड़कर बाल्यावस्था से ही कुशाग्र एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी थे। उनके जीवन में घटित घटनाओं ने उन्हें सामाजिक चिंतन की ओर मोड़ दिया। वे व्यष्टि से समष्टि की ओर उन्नत हुए और सम्पूर्ण भारत देश के हित साधक बन गये। उन्होंने देश के सभी लोगों को बन्धुत्व का पाठ पढ़ाया तथा समता, स्वाधीनता के महत्व को समझाया। उन्होंने कहा कि हम सब भारतीय परस्पर सगे भाई हैं। ऐसी स्थिति में जातियाँ आपसी ईर्ष्या और द्वैष बढ़ाती हैं। उन्होंने कहा कि यदि हमें राष्ट्र को उच्चासन तक पहुँचाना है तो इस अवरोध को दूर करना होगा तभी बन्धुभाव पनपेगा। अपने आदर्शों और सिद्धान्तों के लिए उन्होंने आजीवन संघर्ष किया जिसका सुखद परिणाम दलितों में आई जागृति एवं नवचेतना के रूप में हम देख सकते हैं। उनके सिद्धान्त एवं चिन्तन आज भी प्रासंगिक हैं।

Introduction

सामाजिक समरसता के प्रणेता एवं दलितों के मसीहा डॉ. भीमराव अम्बेड़कर भारत देश के ही नहीं विश्व के भी पुरुष रत्न माने जाते हैं। अम्बेड़कर जी का जन्म 14 अप्रैल सन् 1891 को महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले के अम्बावडे गाँव में हुआ। उनके पिता का नाम श्रीरामजी तथा माता का नाम भीमावाई था। माता–पिता तथा अपने गाँव की चिरस्थायी स्मृति को स्मृत रखने के लिए उन्होंने अपना नाम भीमराव रामजी अम्बेड़कर रखा। अमेरिका से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि लेने के उपरान्त कोलम्बिया विश्वविद्यालय ने उन्हें ''भारत का राष्ट्रीय लाभांश– एक ऐतिहासिक एवं विश्लेशणात्मक अध्ययन'' विषय पर पीएच. डी. उपाधि से अलंकृत किया।

उन्होंने अपना जीवन सरकारी कार्यालय में एक लिपिक के रूप में शुरू किया, लेकिन शीघ्र ही सवर्ण हिन्दुओं के विरोध के कारण उन्हें नौकरी छोड़नी पड़ी। इसके उपरान्त उन्होंने अछूतों को संगठित किया तथा जीवन पर्यन्त उनके हित साधक बने रहे। वे संविधान निर्मात्री सभा के सदस्य होने के साथ ही भारत के कानून मंत्री भी बनाये गये और उन्होंने भारतीय संविधान का प्रारूप तैयार करके उसे संविधान निर्मात्री सभा से पास कराया। इस संविधान के द्वारा भारत को सार्वभौमसत्ता सम्पन्न गणतंत्र घोषित किया। डॉ. अम्बेड़कर ने भारतीय संसद में हिन्दू कोड बिल भी पेश किया और उसे पास कराया।

डॉ. अम्बेड़कर के सामाजिक चिन्तन में उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि ने उन्हें बहुत प्रभावित किया। एक निर्धन एवं अछूत जाति के परिवार में जन्म लेकर वे एक उपेक्षित उत्पीड़न का शिकार रहे। फिर भी वे आज अपनी कर्मठता, दृढ़संकल्प शक्ति, अदम्य साहस एवं दूरदर्शिता के कारण दलित मानव समाज के मसीहा ही नहीं भगवान बन गये। आज दलित वर्ग में वे पूज्य हैं तथा दलित मानव समाज उनको भगवान अम्बेड़कर कहकर जय–जयकार करता है।

डॉ. अम्बेड़कर बचपन से ही कुशाग्र एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी थे। उनके जीवन के अनेक प्रसंगों का उल्लेख किया जा सकता है जिसके कारण उनके सामाजिक चिन्तन में अभिवृद्धि हुई। जब बालक भीमराव स्कूल में भरती हुआ तो उसने अपना नाम भीमराव अम्बावडेकर बताया। जब ब्राह्मण गुरु ने उसके उपनाम का रहस्य जानना चाहा तो उसने बतलाया कि वह आम्बाबडे गाँव का निवासी है, इसलिए अपने नाम के आगे अम्बावडेकर लिखता है। गुरुजी अपने नाम के आगे आम्बेड़कर लिखते थे। अतः उन्होंने भी भीमा के आगे आम्बेड़कर उपनाम जोड़ दिया। गुरुजी ने उसे आम्बेड़कर बनाकर उसके विचारों में क्रान्ति ला दी। वह सोचने लगा कि उसे जन्म की जाति से न चिपक कर ऐसे कार्य करने चाहिए जिसके कारण उच्च वर्णों से भी ऊँचा बन सके। जैसा कि कहा गया है –जन्मना जायते शुद्रोकर्मणा द्विज उच्यते।

इसी तरह एक प्रसंग का और उल्लेख आता है। बालक भीमा को उसी स्कूल में एक ऐसे दूसरे ब्राह्मण गुरु मिले जिन्होंने अत्यन्त स्नेह और आत्मीयता भीमा के साथ दिखाई। वे थे अेंडसे जी जो गुरु आम्बेड़कर जी की भाँति परम दयालु और उदार थे। गाँव से बहुत दूर पैदल चल कर पढ़ने के लिए आने वाले भीमा पर उन्हें दया आ गई और उन्होंने खाने–पीने का बन्दोबस्त अपने ही घर पर कर दिया। भीमा उनकी मानवता और उदारता देखकर भाव–विभोर हो गये। उनके मन में यह बात जम गई कि सभी उच्च वर्ण वाले व्यक्ति एक जैसे नहीं होते हैं। उनमें भी देव और राक्षस वृत्ति वाले होते हैं। इन सभी

प्रसंगों का प्रभाव उनके जीवन पर दृष्टिगत होता है। वहीं दूसरी ओर सवर्णों से भी वे उत्पीड़ित रहे। एक बार बैलगाड़ी में बैठने के पश्चात जब उन्होंने स्वयं को दलित जाति का बतलाया तो गाड़ीवान ने उन्हें गाड़ी से उतार दिया और कहा कि उसके बैठने से गाड़ी अपवित्र हो गई है जिसे धोना पड़ेगा तथा बैलों को नहलाना पड़ेगा। उनके पानी मांगने पर गाड़ीवान ने उन्हें पानी तक नहीं पिलाया और कहा कि ऐसा करने से उसे छूत लग जाएगी। ऐसी ही अनेक घटनाएँ उनके जीवन में घटित हुई। स्कूल के सहपाठियों द्वारा उनसे घृणा करना, उन्हें अछूत समझकर उनसे दूर रहना आदि घटनाओं ने उन्हें विद्रोही बना दिया।

उनके जीवन में घटित घटनाक्रमों ने उन्हें सामाजिक चिन्तन की ओर मोड़ दिया। वे व्यष्टि से समष्टि की ओर उन्नत हुए तथा अपना ही नहीं सम्पूर्ण भारत देश के हित साधक बनते चले गये। उन्होंने देश के सभी लोगों को बन्धुत्व का पाठ पढ़ाया तथा समता, स्वाधीनता के महत्त्व को समझाया –''हम सब भारतीय परस्पर सगे भाई हैं ऐसी भावना अपेक्षित है। इसे ही 'बन्धुभाव' कहा जाता है और आज उसी का अभाव है। जातियाँ आपसी ईर्ष्या और द्वेष बढ़ाती है। अतः यदि राष्ट्र के उच्चासन तक हम पहुँचना चाहते हैं तो इस अवरोध को दूर करना होगा, तभी बन्धुभाव पनपेगा। बन्धुभाव ही नहीं रहेगा तो समता, स्वाधीनता सब अस्तित्वहीन हो जायेंगे।''

डॉ. अम्बेड़कर का सामाजिक चिन्तन आज भी प्रासंगिक है। वे जाति प्रथा और ऊँच–नीच के तुच्छ विचारों से परे थे। वे सामाजिक न्याय के पक्षधर तथा समानता के समर्थक थे। उन्होंने 'भारतीय जाति, उत्पत्ति, विकास और कार्य पद्धति' शीर्षक में अपनी विचारधारा स्पष्ट की। 'हिन्दुओं की जाति प्रथा और उसको नष्ट करने के उपाय' शुद्र कौन थे? अस्पृश्य कौन थे? अस्पृश्य कैसे बने? आदि आलेखों से भी उनके सामाजिक विचार जाने जा सकते हैं। उन्होंने भारतीय समाज व्यवस्था का ऐतिहासिक विश्लेषण करते हुए बतलाया कि इसके प्रारम्भ में ऊँच–नीच के कठघरे बने हुए नहीं थे, किन्तु स्वार्थी लोगों ने अपना मतलब गांठने के लिए उसमें दरारे पैदा कर दी, जिनके कारण समाज व्यवस्था खंडित हो गई। उनकी मान्यता थी कि अन्तर जातीय विवाह ही इस जाति प्रथा की खाई पाटने का एक मात्र उपाय है। उनके सामाजिक विचारों का आधार मनुष्य और मनुष्यता है, जिन्हें किसी भी प्रकार के वर्ग विशेष में विभक्त नहीं किया जा सकता।

डॉ. भीमराव अम्बेड़कर संकीर्ण विचारों से ऊपर उठे हुए थे। उन्होंने धर्म में भी समता के भाव को अभिव्यक्त किया। उन्होंने कहा –''जो धर्म विषमता का समर्थन करता है, उसका हम विरोध करते हैं। अगर हिन्दू धर्म अस्पृश्यता का धर्म है तो उसे समानता का धर्म बनना चाहिए। हिन्दू धर्म को चातुर्वण्य निर्मूलन की आवश्यकता है। चातुर्वण्य व्यवस्था ही अस्पृश्यता की जननी है। जाति भेद और अस्पृश्यता ही विषमता के रूप हैं। यदि इन्हें जड़ से नष्ट नहीं किया गया तो अस्पृश्य वर्ग इस धर्म को निश्चित रूप से त्याग देगा।''

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अम्बेड़कर जी के अवदान का चिन्तन करें तो उन्होंने समाज के ऐसे तबके का कुशल नेतृत्व प्रदान किया जो सदियों से अभिशप्त था। रूढ़िवादी हिन्दू समाज व्यवस्था को खारिज करने के बाद उनके द्वारा बौद्ध धर्म स्वीकार करना उन्हें सम्राट अशोक महान की श्रेणी में ला खड़ा करता है। भारत में अंग्रेजों के शासन के उपरान्त अम्बेड़कर ही सामाजिक व राजनीतिक विकास की रीढ़ बने। वे दृढ़काय, स्थूलदेह, साहसी और अपार विद्वता के पावन पुजारी थे। उनका स्मरण सदैव उत्साह एवं शान्ति का संचार करता रहेगा। सामाजिक परिवर्तन के पुरोधा के रूप में वे सदैव स्मृत रहेंगे। उन्होंने समाज व राष्ट्र के लिए जो अवदान किया वह अद्वितीय एवं अनुपम है। अपने आदर्शों और सिद्धान्तों के लिए उन्होंने आजीवन संघर्ष किया जिसका सुखद परिणाम इन दलितों में आई जागृति तथा नवचेतना के रूप में हम देख सकते हैं। वे केवल दलित वर्ग के प्रतिनिधि और पुरोधा ही नहीं थे अपितु अखिल मानव समाज के शुभचिंतक महामानव भी थे। उनके अध्ययन, चिंतन और मनन की संकलित सामग्री से हम अपने ज्ञानकोष की वृद्धि कर सकते हैं। उनके द्वारा किये गये सुकृत कार्यों के कारण ही भारत सरकार ने मरणोपरान्त 14 अप्रैल, 1990 को उन्हें सर्वोच्च नागरिक अलंकरण 'भारत रत्न' से सम्मानित किया। उनका चिन्तन आज भी अजर है अमर है। वे अपने समय के युगदृष्टा, सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत तथा सदियों से शोषित पीड़ित मानव समाज के पथ–प्रदर्शक हैं। देश इनके योगदान के लिए सदैव ऋणी रहेगा। अंत में दलितों के उत्थान तथा नव जागृति लाने हेतु एक दलित कवि माता प्रसाद की कुछ पंक्तियाँ विचारणीय हैं।

आओ मिलकर दलित जन जगाएँ।
सबको उन्नति का पथ हम दिखाएँ।
वाल्मीकि हमारे हैं भाई,
सबके पीछे वहीं हैं दिखाई।
पासी, धोबी, खटीक सब मिलाएँ
x x x x
अपने बच्चों को हम सब पढाएँ।

संदर्भ पुस्तकें एवं पत्र पत्रिकाएँ :

1. दलित–साहित्य –डॉ. रामप्रसाद मिश्र, आधुनिक प्रकाशन, दिल्ली (साहित्यिक और सांस्कृतिक निबंध)
2. भारतीय इतिहास कोश–सच्चिदानन्द भट्टाचार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

3. महापुरुषों की जयन्तियाँ एवं पर्व–ओमदत्त जोशी, राजस्थानी साहित्य संस्थान,जोधपुर
4. दीक्षा दर्पण (पाक्षिक) जयपुर
5. राजस्थान पत्रिका (दैनिक) जयपुर
6. दैनिक भास्कर (दैनिक) जयपुर